INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 7 | AUGUST - 2022

भीष्म साहनी और प्रेमचंद कहानीकारों में मानवीय चेतना

उमा मिश्रा[1] & डॉ. वंदना त्रिपाठी[2]
[1]शोधार्थी हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.).
[2]सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर, महाविद्यालय रीवा (म.प्र.).

सारांश –

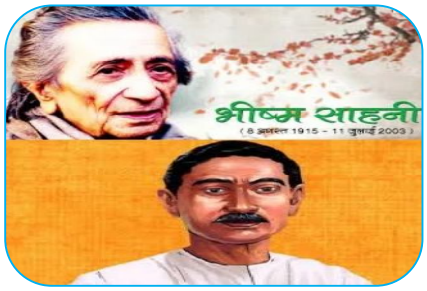

प्रेमचंद ने ही हिन्दी कहानी को सर्वप्रथम सौन्दर्यमय कल्पना लोक से निकाल कर यथार्थ का चित्रण करते हुए सर्वसामान्य व्यक्ति के जीवन सत्यों को अभिव्यक्त किया, उन सभी पर प्रेमचंद का प्रभाव रहा। सन् 1960 के बाद हिन्दी कहानी साहित्य में भिन्न–भिन्न नामों से अनेक साहित्यिक आंदोलन चले, जिसकी शुरुआत नयी कहानी से हुई और सन् 1980 तक आते–आते हिन्दी कहानी जनवादी कहानी के नाम से पहचानी जाने लगी। इस काल में कहानी साहित्य में अनेक प्रतिभा संपन्न कहानीकारों का आगमन हुआ। वैसे तो प्रेमचंद युग में हिन्दी कहानी की अपनी पहचान बन चुकी थी।

मुख्य शब्द – प्रेमचंद, जनवादी, कहानी एवं मानवीय चेतना।

प्रस्तावना –

यशपाल के आगमन से हिन्दी कहानी साहित्य में प्रगतिशील विचारधारा का आरंभ हुआ। यशपाल ने अपने सम्पूर्ण साहित्य में मार्क्सीय चिंतन का आधार लेकर द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की भूमिका को अपनाते हुए वर्ग संघर्ष का चित्रण किया। यह सच है कि इस देश के मजदूर, किसान और पीड़ित वर्ग को कहानी में सबसे पहले स्थान प्रेमचंद ने दिया। समस्त शोषित वर्ग की पीड़ाओं और यातनाओं की यथार्थ अभिव्यक्ति प्रेमचंद की कहानियों में सर्वप्रथम हुई।

प्रेमचंद की कहानियाँ किसी वाद विशेष में न बंधकर मानवतावादी लगती हैं। प्रेमचंद की ही परंपरा को लेकर सुदर्शन, कौशिक आदि कहानीकार हिन्दी कहानी आंदोलन को विकास की दिशा की ओर बढ़ाते रहे। इसी युग में प्रसाद का भी कहानी क्षेत्र में आगमन हुआ और प्रसाद भावमूलक परंपरा के अपने युग के सबसे सामर्थ्यशाली साहित्यकार हुए। किन्तु जिस परंपरा को प्रेमचंद ने स्थापित किया था वही आगे चलकर कहानी साहित्य में विकसित हुई प्रसाद की भावमूलक परंपरा के कुछ कहानीकार अवश्य हुए पर कालांतर में प्रेमचंद की मानवतावादी भूमिका और यशपाल की साम्यवादी दृष्टि के कारण हिन्दी कहानी साहित्य प्रगतिशील विचार और चिंतन से बहुत अधिक प्रभावित हुआ।

प्रेमचंद परंपरा का सर्वाधिक निर्वाह प्रेमचंद के पश्चात सुदर्शन में दिखाई देता है। चरित्र और वातावरण प्रधान जो कहानियाँ सुदर्शन ने लिखी वह बड़ी कलात्मक सिद्ध हुई। इसी परंपरा ज्वालादत्त शर्मा आते हैं जिन्होंने अपनी कहानियों में उपेक्षित वर्ग की समस्याओं को उठाया। सुदर्शन की कहानियों की जिस युग में बड़ी चर्चा रही लगभग उसी युग में हिन्दी कहानी साहित्य में भीष्म साहनी का आगमन हुआ। उनका प्रथम कहानी संग्रह 'भाग्यरेखा' सन् 1953 में प्रकाशित हुआ। इस कहानी–संग्रह की कहानियाँ पढ़ने से स्पष्ट होता है कि भीष्म साहनी कहानी में उसी परंपरा को आगे लेकर चलना चाहते हैं जिसकी शुरुआत प्रेमचंद ने की थी।

भीष्म साहनी की मानसिकता जब से वे कहानी साहित्य में आए तब से समाजधर्मी और यथार्थ परख रही है। प्रेमचंद की विचारधारा को उन्होंने न सिर्फ स्वीकार किया अपितु उसे आत्मसात किया। जब कोई विचारधारा व्यक्ति आत्मसात कर लेता है तो वह उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व में घुलमिल जाती है। प्रेमचंद के संदर्भ में भी भीष्म साहनी जी के साथ ऐसा ही हुआ। यह निर्विवाद है कि भीष्म साहनी जी प्रेमचंद की परंपरा के कथाकार हैं किन्तु वे प्रेमचंद को मात्र स्थूल रूप में स्वीकारने या आगे बढ़ाने के अभिलाषी नहीं हैं। इसीलिए कहा भी है, 'आज प्रेमचंद की परंपरा को अधिक वैज्ञानिक और कलात्मक आधार देकर आगे बढ़ाने की जरूरत है।'[1]

बात ऐसी भी नहीं है कि प्रेमचंद के विकासक्रम से भीष्म साहनी परिचित नहीं हैं। वे इस बात को भलीभाँति जानते हैं कि, ''आखिरी दौर में प्रेमचंद समाजवादी पद्धति को लागू करने की अपरिहार्यता समझ गए थे।''[2] हिन्दी कहानी में प्रेमचंद की परंपरा का अनेकों ने अनुकरण किया। जिन कथाकारों ने प्रेमचंद को पूरी तरह से आत्मसात करते हुए उनकी जनसामान्य के चित्रण की परंपरा को विकसित किया और उसे एक नया मोड़ दिया। उनमें भीष्म साहनी सबसे प्रमुख हैं।

प्रेमचंद की परंपरा को स्वीकार करने वालों में भीष्म साहनी अलग से इसलिए पहचाने जाते हैं क्योंकि उनकी कहानियाँ बड़ी ही सहज और आत्मीय हैं, उसमें चमत्कार या चौंकाने की वृत्ति नहीं है। भीष्म साहनी जी का समस्त कहानी संसार जान बूझ कर रचा गया सा नहीं है बल्कि वह घटित हुआ है। उनकी कहानियों के कथन, भाषा या कथ्य में कहीं पर भी अतिशयोक्ति नहीं है। भीष्म साहनी जी कहानी संसार प्रेमचंद जी की कहानियों के समान है। जिस सादगी और सहजता से वे कहानी के कथ्य को प्रस्तुत करते हैं वैसी सरलता अन्यत्र दुर्लभ ही है। भीष्म साहनी जी अपनी कहानियों में विचार, चरित्र या अनुभव का ताना–बाना कुछ इस तरह से बुनते हैं कि वह एक स्वतंत्र कलाकृति बन जाती है। वर्तमान भारत के महानगरों और नगरों में रहने वाला मध्यवर्ग और निम्नवर्ग भीष्म साहनी जी की कहानियों का प्रमुख विषय है।

रचना की सोद्देश्यता जिस प्रकार से भीष्म साहनी जी की कहानियों में सहजता से दिखाई देती है वह बहुत कम कहानीकारों में दिखाई देती है। साथ ही भीष्म साहनी ने साम्प्रदायिकता के परिवेश को भी उसके अनेक पहलुओं के साथ विश्लेषित किया है। उनका यथार्थवाद एक ओर सामाजिक जीवन के तथ्यों को मार्मिक रूप देता है तो दूसरी ओर व्यक्तिगत चेतना का संस्कार भी करता है। परिणामतः उनकी कहानियों के गठन और संयोजन में कहीं किसी प्रकार की त्रुटि नजर नहीं आती। भीष्म साहनी अंधविश्वास, रूढ़ियों और अंधश्रद्धाओं की गलत रीतियों के विरुद्ध है। उन्होंने जनवादी आदमी की धारणा को ही मुख्य माना है।

विश्लेषण –

भीष्म साहनी के प्रगतिशील विचार समकालीन जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले हैं। उनके समस्त साहित्य में मनुष्य के विवेक की उच्च संस्कृति को देखा जा सकता है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से मध्य, निम्नमध्य और निम्नवर्ग के संस्कारों को बदलने का रचनात्मक प्रयास किया है।

भीष्म साहनी की कहानियों का धरातल बड़ा व्यापक है और इसीलिए संस्कारों के बदलाव के साथ–साथ वे कहानियों में सामाजिक और वैयक्तिक मूल्यों का समन्वय भी करते हैं। वे कहीं पर भी पाश्चात्य सभ्यता या संस्कृति से प्रभावित न होकर आधुनिक बोध को सबसे अधिक महत्व देते हैं।

'चीफ की दावत' उनकी ऐसी कहानी है जिसमें एक और भारतीय प्राचीन जीवन मूल्य हैं तो दूसरी ओर आधुनिक जीवन मूल्य। इस कहानी में श्यामनाथ अपनी पत्नी को मार्डन रूप में देखना चाहता है और चीफ की दावत के समय अपनी वृद्ध माँ को एक कमरे से दूसरे कमरे में बिठाता है। श्यामनाथ की मानसिकता के माध्यम से लेखक ने जीवन मूल्यों के प्रश्नों को उभारा है। इसी प्रकार से उनकी 'चाचा मंगलसेन', 'तमगे', 'खून का रिश्ता' आदि कहानियों में भी व्यक्ति जीवन की विसंगतियों के साथ–साथ परिस्थितिजन्य विवशताओं का भी यथार्थ निरूपण हुआ है। सामन्यतः उनके पात्र आर्थिक संघर्षों से जूझने वाले हैं। उनकी कहानियों में मध्य और निम्नवर्ग की कुंठा, विवशता और लालसा का मार्मिक निरूपण हुआ है। मानवीय जीवन का बिखराव और घुटन उनकी कहानियों में यथार्थ रूप में चित्रित है।

''उनकी कहानी समाजगत चिंतन के आधार पर व्यक्ति की आत्म–कहानी है जो पूरे भारतीय समाज की संस्कृति तथा सभ्यता को उजागर करती है।''[3] भीष्म साहनी जी ने अपनी कहानियों में खोखले नैतिक बंधन,

अंधविश्वास और गलत मान्यताओं का खंडन करते हुए वर्तमान जीवन के संघर्ष को अत्यधिक महत्व दिया है। कई कहानियों में व्यंग्य का रूप ही बड़ा संघर्ष को अत्यधिक महत्व दिया है। कई कहानियों में व्यंग्य का रूप ही बड़ा तीखापन लिए हुए है। 'पहला पाठ' और 'इन्द्रजाल' कहानियों में यह बात देखी जा सकती है। मानवीय विवशताओं और विषमताओं के बीच जूझता हुआ आम आदमी उनकी कहानियों में सर्वत्र दिखाई देगा। 'पटरियाँ' कहानी में जो चरित्र आए हैं वे बेरोजगारी और आर्थिक विषमताओं से जूझने वाले हैं। केशोराम एक पढ़ा–लिखा व्यक्ति है पर गरीब होने से कुंठाग्रस्त है। उसकी कुंठा इस हद तक पढ़ा–लिखा व्यक्ति है पर गरीब होने से कुंठाग्रस्त है। उसकी कुंठा इस हद तक बढ़ जाती है कि वह अपने आप को अपने ऑफिस के बाहर के जीवन और यहाँ तक की अपनी पत्नी से भी कटा हुआ पाता है। इस पात्र की कुंठा और घुटन का मनोवैज्ञानिक चित्रण लेखक ने किया है। समकालीन कहानी आंदोलन के दौरान उभरे जिन कहानीकारों ने कहानी को आंदोलन के घेरे से बाहर निकालने का प्रयास किया, उनमें भीष्म साहनी जी एक हैं।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः स्वातंत्र्योत्तर नारी के नए रूप को लेकर भीष्म साहनी और उनके समकालीन कहानीकारों ने अनेक कहानियाँ लिखीं जिसमें पारिवारिक विघटन से लेकर नारी के नए रूप का चित्रण किया गया है। भीष्म साहनी की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता मनुष्य को उसके परिवेश में देखने की यथार्थ दृष्टि है। जहाँ तक पात्रों का संबंध है उनकी कहानियों के सभी पात्र वास्तविक जीवन से चुने गए हैं। उनकी कहानियों के चरित्र आधुनिक मध्य एवं निम्नवर्गीय सामाजिक जीवन के धरातल से जुड़े हैं। भीष्म जी प्रबुद्ध, संवेदनशील एवं सात्विक वृत्ति के कहानीकार हैं। उनकी कहानियों में मानवता का स्वर मुखरित हुआ है।

संदर्भ –

[1]सं. राजेश्वर सक्सेना – प्रताप ठाकुर भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना, पृष्ठ 12
[2]संपादक दयानंद पांडे – प्रेमचंद व्यक्ति और रचना दृष्टि, पृष्ठ 2
[3]डॉ. वासुदेव शर्मा – साठोत्तर हिन्दी मूल्यों की तलाश, पृष्ठ 102